1

स्वर्गीय राज्य के लोग

(मत्ती 5:1-12)

मत्ती 5-7 को ''संसार में साहित्य का सर्वोत्तम उपदेश,''[1] ''राजा का घोषणा पत्र,'' ''भक्ति पूर्ण जीवन की डायरेक्ट्री,'' और ''कलीसिया का महान चार्टर'' और ''स्वर्ग के राज्य का संविधान'' कहा गया है। हम में से अधिकतर लोग इसे चौथी सदी में अगस्टिन द्वारा दिए गए शब्द ''पहाड़ी उपदेश''[2] के नाम से जानते हैं। लाखों पुस्तकें, लेख, प्रवचन और पाठ इसी पर आधारित हैं। अधिकतर लोग इसे जीवन जीने की सर्वोच्च अभिव्यक्ति के रूप में जानते हैं।

दुख की बात है कि पहाड़ी उपदेश यीशु की सबसे अधिक विख्यात शिक्षाओं में से ही नहीं, बल्कि शायद सब से कम समझा गया और सबसे कम अनुसरण किया जाने वाला भी है।[3] इस अध्ययन को आरम्भ करते हुए मेरी प्रार्थना है कि इस शृंखला से आप को इसे बेहतर ढंग से समझने में सहायता मिलेगी। मैं यह भी उम्मीद करता हूं कि इससे आपको इसके नियमों को मानने की प्रेरणा भी मिले (देखें मत्ती 7:24-27)।

हमारे अध्ययन के लिए तैयारी

कुछ अस्वीकरण

मत्ती 5:1-12 में जाने से पहले, मैं कुछ पृष्ठभूमि देना चाहूंगा। मैं कुछ अस्वीकरणों के साथ आरम्भ करूंगा। पहले मैं इस बात पर ज़ोर देना चाहता हूं कि *पहाड़ी उपदेश उस सब का कुछ सार नहीं है जो यीशु ने सिखाया*। मत्ती 5-7 में बहुत से महत्वपूर्ण विषयों को छुआ गया है, पर हम ऐसा नहीं कर सकते कि उन अध्यायों को रख लें और मसीह की शेष शिक्षाओं को फैंक दें।

लगता है कि कुछ लोगों को लगता है कि केवल पहाड़ी उपदेश पर ही ध्यान दिया जाना चाहिए। वे आसानी से कह देते हैं, ''मैं उन सब महत्वहीन बातों की परवाह नहीं करता जिन पर प्रचारकों को चिल्लाते रहना अच्छा लगता है। मैं तो केवल पहाड़ी उपदेश के अनुसार जीने में विश्वास रखता हूं।'' कई बार वे यह प्रभाव छोड़ते हैं कि ''पहाड़ी उपदेश के अनुसार जीना'' आसान काम है। उनके ऐसा करने पर मुझे तो आश्चर्य होता है कि उन्होंने इस उपदेश को कभी ध्यान से पढ़ा भी है या नहीं (उदाहरण के लिए, देखें 5:39)।

सबसे स्पष्ट बात जो उपदेश में नहीं है, वह सुसमाचार यानी हमारे पापों के लिए मसीह की मृत्यु का शुभ समाचार है। चार्ल्स आर. अर्डमैन ने पहाड़ी उपदेश पर यह गहन दृष्टि डाली है:

> यह राज्य के मूल नियमों को तो ठहराता है, पर मसीह के ईश्वरीय व्यक्ति और छुटकारे के कार्य की सच्चाई के अलावा यह सुनने वाले के दिल को उदासी और निराशा से भर देता है।

अर्डमैन के अनुसार यदि हमारे पास केवल यही उपदेश धर्मशास्त्र होता तो, हम सब श्रापित होते-क्योंकि यह आचरण का ईश्वरीय आदर्श और सिद्ध मानक देता है। कोई भी बिना ईश्वरीय सहायता के इस मानक तक पहुंचना आरम्भ नहीं कर सकता।[4]

इसलिए मैं दोहराता हूं कि पहाड़ी उपदेश उस सब का कुल जोड़ नहीं है जो यीशु ने सिखाया। यह मसीह के राज्य में होने की शर्तों से जुड़ी बातों का सार है, पर इसमें वे सब बातें नहीं हैं जिन्हें हमें उसके चेलों के रूप में पता होना चाहिए।

दूसरा, *यीशु का मुख्य उद्देश्य यह नहीं था कि अपने संगी यहूदियों को फिर से मूसा की व्यवस्था के नियमों में वापस ले जाए।* कुछ लोग यह जोर देते हैं कि यह उपदेश पुराने नियम के नियमों को बहाल करने के यीशु के प्रयास से थोड़ा सा बढ़कर है। यह सच है कि यह उपदेश यहूदियों को सुनाए जाने के समय पुराना नियम प्रभावी था।[5] इस लिए हमें इसमें वेदी पर बलिदान लाने (आयतें 23, 24) जैसे पुराने नियम के उद्धरणों (देखें 5:21) और हवालों को देखकर आश्चर्य नहीं होता।[6] परन्तु हमें समझना चाहिए कि यीशु ने अतीत को तो नकारा नहीं, पर वह भविष्य के लिए एक नए मार्ग को खोल रहा था। अध्याय 5 को देखें और ध्यान दें कि उसने कितनी ही बाार कहा, ''तुम ने सुना है कि ऐसा कहा गया था ... पर मैं तुम से कहता हूं'' (आयतें 21, 22, 27, 28, 33, 34, 38, 39, 43, 44)। यीशु ने मूसा के अधिकार की ओर नहीं बल्कि अपने अधिकार की ओर ध्यान दिलाया (देखें 7:28, 29)।

तीसरा (और शायद सबसे आवश्यक); *पहाड़ी उपदेश असम्भव बातें नहीं बताता।* कइयों ने उपदेश को यह मान कर कि ''ऐसा करके देखें ही क्यों?'' ना पूरा किया जा सकने वाला आदर्श मानने के इनकार कर दिया है। दूसरे कुछ यह सुझाव देते हैं कि यीशु की मंशा यह कभी नहीं थी कि उपदेश की बातें इक्कीसवीं सदी के लोगों पर लागू हों। वे कहते हैं कि यीशु के मूल निर्देश केवल उनके अपने समय के चेलों के लिए था कि वे शीघ्र स्थापित होने वाले सांसारिक राज्य के लिए तैयार करे। ऐसा सुझाव यीशु (क्योंकि यह उसके परमेश्वर की योजनाओं से अपरिचित होने का संकेत है) और पवित्र आत्मा जिस ने वचन के लिखे जाने की प्रेरणा दी (क्योंकि इसका अर्थ है कि उसका प्रकाशन हर युग के लिए नहीं है) दोनों का अपमान है।

माना कि पहाड़ी उपदेश में पाए जाने वाले बहुत से नियमों को प्रतिदन जीवन के लिए काबू करना कठिन है। मैं मानता हूं कि मैं उपदेश के मानकों से नीचे रह जाता हूं कि मैं मसीह की बहुत सी उम्मीदों पर खरा उतरने की कोशिश करता हूं और मांगता हूं कि इस पृथ्वी पर मेरे अन्तिम दिन तक भी मैं प्रयास करता रहूं। यह, यह कहने की तरह नहीं होगा कि उपदेश की उम्मीदें नामुकिन हैं या हमें इन मानकों के अनुसार जीने की पूरी कोशिश नहीं करनी चाहिए। हम अपने सुनने वालों के साथ न्याय नहीं करते जब हम पहाड़ी उपदेश के नियमों में ''मिलावट'' कर देते हैं। जी. के. चैस्टर्टन की मत्ती 5-7 पर टिप्पणी पर ध्यान दें:

> ... पहली बार पढ़ने पर ऐसा लगता है कि जैसे सब कुछ उलटा पुल्टा हो गया हो, पर दूसरी बार पढ़ने पर पता चलता है कि सब कुछ सीधा है। पहली बार पढ़ने पर आप को लगता है कि असम्भव है, दूसरी बार आपको लगता है कि इसे छोड़ और कुछ भी असम्भव नहीं है।[7]

पाठों की इस शृंखला में हम सब के लिए यह एक चुनौती होगी कि हम पहाड़ी उपदेश में पाई जाने वाली आज्ञाओं को पूरा करने के लिए अपना पूरा यत्न करें। ऐसा करते हुए, हमें परमेश्वर से शक्ति और साहस मांगना चाहिए कि हम वह बन सकें जो हमें बनना चाहिए और वह कर सकें जो हमें करना चाहिए। फिर, इन्हें करने की पूरी कोशिश करने के बावजूद हम में कमी रह जाने पर हम अपने आप को परमेश्वर की करुणा और अनुग्रह को दे दें।

चर्चा

अन्य आरम्भिक मामलों की चर्चा की जा सकती है। उदाहरण के लिए, कुछ लोगों को लगता है कि मत्ती 5-7 में पहाड़ी उपदेश और लूका 6 में मैदानी उपदेश शायद एक ही हैं। सदियों पहले बहुत से लोगों का मानना था कि यह दोनों अलग-अलग उपदेश हैं। आज, यह आम सुनने में आता है कि यह दोनों एक ही उपदेश का विवरण है। यह ऐसा प्रश्न है जिसे हम सुलझा नहीं सकते, और न ही यह आवश्यक है कि हम इसे सुलझाएं। दोनों एक ही उपदेश है या नहीं, पर इनमें काफ़ी समानताएं हैं कि हम अपने लाभों के लिए दोनों की तुलना करें। हमारा ध्यान मत्ती के विवरण पर रहेगा, पर बीच-बीच में मैं लूका के विवरण की बात भी करता रहूंगा।

कम से कम पृष्ठभूमि के बारे में एक और बात कही जानी चाहिए। इन पाठों को तैयार करते हुए मैं यीशु के शब्दों को स्वयं बोलने न देने के बजाय लिखने की अधिक पड़ताल करने के इस खतरे से परिचित था। फूल को तोड़ कर उसकी एक-एक पत्ती की समीक्षा करने के चक्र में फूल की सुन्दरता ही नष्ट कर दूं। मैं वचन की समीक्षा करूंगा पर मैं प्रार्थना करता हूं कि मेरी टिप्पणियां यीशु की बातों से आगे न हों। बल्कि मैं उम्मीद करता हूं कि ये वचन पर प्रकाश डालें जिससे इसकी सुन्दरता और सामर्थ का पता चले। मैं यह कहने का प्रयास नहीं करूंगा कि इन अध्यायों पर जो भी कहा जा सकता है कहूं। मैंने पहाड़ी उपदेश पर लिखी दूसरों की बातों से मैंने यदि कुछ नहीं सीखा है तो भी मैंने यह सीख लिया है कि इस अद्वितीय संदेश में हर बार कुछ न कुछ और कहा जाने के लिए होता है।

अब के लिए यह आरम्भिक जानकारी काफ़ी है। सम्बन्धित अन्य मसलों पर मत्ती 5 अध्याय की पहली कुछ आयतों पर ध्यान देते हुए बात करेंगे।

उपदेश की तैयारी (5:1, 2)

पृष्ठभूमि

मत्ती 5 अध्याय का आरम्भ इन शब्दों के साथ होता है: ''भीड़ को देखकर यीशु पहाड़ पर चढ़ गया और जब बैठ गया'' (आयत 1क, ख)। यीशु द्वारा देखी गई भीड़ों का उल्लेख पिछले अध्याय की अन्तिम आयत में मिलता है: ''गलील और दिकापुलिस, यरूशलेम, यहूदिया और यरदन नदी के पार से भीड़ की भीड़ उसके पीछे हो ली'' (4:25)।

मत्ती 4 में हम यीशु की पृथ्वी पर की सेवकाई के बीच में डेढ़ वर्ष के आरम्भ के बारे में पढ़ते हैं जिसे ''गलील की महान सेवकाई'' कहा जाता है। यीशु यहूदिया के इलाके में प्रचार कर रहा था (देखें यूहन्ना 3:22-24), पर जब उस ने ''जब उसने यह सुना कि यूहन्ना [बपतिस्मा

देने वाले] को पकड़वा दिया गया [देखें मत्ती 14:3], तो वह गलील को चला गया'' (मत्ती 4:12)। गलील वही स्थान था, जहां यीशु ने अपने जीवन के आरम्भिक तीन वर्ष बिताए थे। उस इलाके में वापस आने के बाद उसने लोगों को पूर्ण कालिक चेले बनने के लिए बुलाया (आयतें 18-22)। वह ''सारे गलील में फिरता हुआ उनके अराधनालयों में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा'' (आयत 23)। उसके राज्य के प्रचार का केन्द्र था, ''मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है'' (आयत 17)। शीघ्र ही ''बड़ी भीडें उसके पीछे हो ली'' (आयत 25क)। उस भीड़ को देखकर यीशु ''पहाड़ पर चढ़ गया'' (5:1ख)। शायद वह भीड़ से दूर जाना चाहता था, या केवल सही स्थान की तलाश में था जहां से वह अपने सुनने वालों को सम्बोधित कर सके।

हम नहीं जानते कि प्रभु किस ''पहाड़ी'' पर ''चढ़ा।'' मान्यता के अनुसार यह स्थान ''हतीन के सींग'' था, पर हम पक्का नहीं कह सकते कि यही वह स्थान था। वह शब्द जिसका अनुवाद ''पहाड़ी'' (*oros*) किया गया, उसका अर्थ ''पर्वत'' भी हो सकता है। (यही यूनानी शब्द 5:14 में भी इस्तेमाल हुआ है जो ''पहाड़ पर बसे गांव'' की बात करता है।) ''पहाड़ी'' से पहले उप पद ''एक'' का अर्थ, आवश्यक नहीं कि किसी प्रसिद्ध पहाड़ी ही हो। जोसेफ़ एच. थेयर के शब्दकोष के अनुसार यह पद ''उस बताई गई जगह के सबसे निकट पहाड़ी, यानी निकट के पहाड़'' की ओर संकेत करता है।''[8] यह उपदेश शायद उस उभरी हुई ऊबड़-खाबड़ भूमि पर जो गलती से झील के पश्चिम में पाई जाती है, दिया गया।

वचन पाठ में वापस आकर हम पढ़ते हैं, ''और जब बैठ गया, तो उसके चेले उसके पास आए'' (आयत 1ग, घ)। सिखाने के लिए बैठना सामान्य आसन था (देखें 13:2; 23:2; 24:3; 26:55)। यहूदी आराधनालयों में, सिखाने वाला बैठ जाता था (देखें लूका 4:20)। ध्यान दें कि वचन पाठ कहता है कि ''उसके *चेले* उस के पास आए।''[9] अगली आयतें कहती हैं कि वह ''उन्हें उपदेश देने लगा।'' लूका के विवरण के अनुसार इस उपदेश के पहले यीशु ने बारह प्रेरितों का चयन किया (देखें लूका 6:12-16)। यदि ऐसा है तो, उपदेश को ''नए चुने गए प्रेरितों के परिचायक सबक'' मानना चाहिए।[10] परन्तु यीशु के इन बारह के अलावा और चेले भी थे (देखें लूका 10:1)। चेला या शिष्य उसे कहते थे जो सीखने के लिए गुरू के पीछे चलता था। मत्ती 5:1 वाले चेलों ने कुछ हद तक अपने आप को यीशु के साथ जोड़ा हुआ था। वह गम्भीर छात्र थे।

एक प्रकार से पहाड़ी उपदेश सब के लिए है, क्योंकि यीशु चाहता है कि सब उसके चेले बनें। उपदेश के अन्त में हम पाते हैं कि यीशु के यह बताने के समय भीड़ वहीं थी (देखें 7:28-8:1)। परन्तु पूरे तरह से केवल वही जो यीशु के चेले हैं, इस उपदेश के कानूनों को समझ सकते, मान सकते और उनका अनुसरण कर सकते हैं। कहीं और यीशु ने ध्यान दिलाया, ''... मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते'' (यूहन्ना 15:5)।

पृष्ठभूमि को ध्यान में रखें। यीशु ने बैठने के लिए एक उपयुक्त स्थान चुना। फिर उसके चेले (सीखने के लिए गम्भीर) उसके आसपास बैठ गए। और अंत में उन चेलों के पीछे भीड़ यानी वे लोग जो वचन मानने के बजाय उसे जानने को उत्सुक थे। यीशु के बोलते-बोलते भीड़ बढ़ती गई।

बोलना

यह आयत आगे यह कहती है, ''वह [यीशु] अपना मुंह खोलकर उन्हें ... उपदेश देने लगा'' (मत्ती 5:2)। ''अपना मुंह खोल कर'' का अर्थ है ''उसने अपना मुंह खोला ताकि वह बोले।'' यह वाक्यांश ''इब्रानियों [इब्रानी की अभिव्यक्ति]'' थी, जिसका अभिप्राय यह था कि बोले गए शब्द अचानक मुंह से निकले हुए नहीं थे, बल्कि एक विशेष उदेश्य और इच्छा से बोले गए।[11] यीशु ''उन्हें यह उपदेश देने लगा''–और उसका यादगारी उपदेश आगे बढ़ता रहा।

यीशु ने उन्हें पहले ही, अपने शीघ्र स्थापित होने वाले राज्य के बारे में बताया हुआ था:

> उस समय से यीशु ने प्रचार करना और यह कहना आरम्भ किया, ''मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है'' (4:17)।
>
> यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उनके अराधनालयों में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता रहा ... (4:23)।

मत्ती 5–7 में राज्य का अभिषेक यीशु की शिक्षा का केन्द्र बना रहा। ध्यान दें कि प्रवचन में ''राज्य'' शब्द कितनी बार आया (5:3, 10, 19, 20; 6:10, 13, 33; 7:21)। विशेषकर उन हवालों के संदर्भ पर ध्यान दें। प्रवचन का अध्ययन करने पर हमें राज्य के स्वभाव (आत्मिक, न कि सांसारिक) और उस समर्पण का पता चलेगा जिसकी राजा मांग करता है (पूर्ण) सबसे बढ़कर हम जानेंगे कि मसीह के राज्य के नागरिक होने के लिए क्या-क्या आवश्यक है। यानी स्वर्गीय राज्य का नागरिक कौन है और वह क्या करता है।

कुछ लेखक सुझाव देते हैं कि मत्ती 5:1, 2 की आगे की बातें प्रवचन नहीं बल्कि मत्ती द्वारा संग्रहित और इकट्ठा की गई यीशु की शिक्षाएं हैं। यदि हम मत्ती के वृत्तांत को मानते हैं तो इस निष्कर्ष पर पहुंचने का कोई कारण नहीं है कि ''मत्ती प्रवचन को विशेष समय और स्थान में होने वाली विशेष बातचीत के रूप में दिखाता है'' (देखें 5:1; 8:1)।[12] परन्तु यह सम्भवतया सही है कि हमारे पास प्रवचन का संक्षिप्त रूप है। (अपने वर्तमान रूप में इसे ऊंचा पढ़ने के लिए केवल 10 से 15 मिनट चाहिए।) यह भी हो सकता है कि बीच-बीच में यीशु ने विराम लिया हो और उसकी शिक्षा लम्बे समय में दी गई हो। कुछ लोग मत्ती 5–7 को ''पहाड़ पर शिक्षा'' कहने को प्राथमिकता देते हैं।[13] मेरा मानना है कि मत्ती के ये तीनों अध्याय अपने चेलों को दिया, भीड़ द्वारा सुना गया और अन्ततः सब लोगों के लिए जो अपने जीवन उसे देने के लिए तैयार हैं, यीशु का वास्तविक प्रवचन है।

नागरिक बनने की तैयारी (5:3-12)

इस परिचायक पाठ के शेष भाग में हम उस बात का नमूना देखेंगे, जो प्रवचन यानी पहाड़ी उपदेशों के पहले भाग में संक्षेप में देखने के लिए हमारे लिए है:[14]

> ''धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं,
> क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।
> ''धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं,

क्योंकि वे शान्ति पाएंगे।

''धन्य हैं वे, जो नम्र हैं,

क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।

''धन्य हैं वे, जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं,

क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे।

''धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं,

क्योंकि उन पर दया की जाएगी।

''धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं,

क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।

''धन्य हैं वे, जो मेल कराने वाले हैं,

क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।

''धन्य हैं वे, जो धार्मिकता के कारण सताए जाते हैं,

क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

''धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल-बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बातें कहें।

''तब आनन्दित और मगन होना, क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा फल है। इसलिए कि उन्होंने उन भविष्यवक्ताओं को जो तुम से पहिले थे इसी रीति से सताया था'' (5:3-12)।

आठ धन्य वचन हैं। इस्तेमाल किया गया व्यक्त करने का ढंग (धन्य हैं/है) बाइबल में नया नहीं है,[15] पर वचन में हमें ''इतनी लम्बी और सावधानीपूर्वक बनाई गई शृंखला और कहीं नहीं मिलती।''[16]

थोड़ी देर के लिए इस तथ्य को नज़रअन्दाज़ कर दें कि आठवें धन्य वचन को विस्तार दिया गया है। तो हर धन्य वचन के तीन भाग हैं: आशीष, गुण और प्रतिफल उदाहरण के लिए पहले का आरम्भ आशीष के साथ होता है: ''धन्य हैं।'' फिर यह स्वर्गीय राज्य के लोगों के एक गुण को बताता है: ''मन के दीन।'' यह प्रतिज्ञा दिए हुए प्रतिफल के साथ समाप्त होता है: ''स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।'' इस संक्षिप्त समीक्षा में हम तीनों धन्य वचनों के भागों को एक-एक करके देखेंगे।

आशीष

धन्य का अनुवाद यूनानी शब्द *makarios* से किया गया है जिसका अर्थ ''आशीषित'' या ''प्रसन्न'' है। ''यह किसी ऐसे व्यक्ति का परिचय देता है जिसे बधाई दी जानी है, ऐसे व्यक्ति को जिसका जीवन में स्थान दाह करने वाले वाला हो।''[17] कुछ लोग कहते हैं कि परमेश्वर नहीं चाहता कि उसके बच्चे प्रसन्न हो, पर यह शैतान का झूठ है। परमेश्वर ने मूल दम्पत्ति को चूहों से पीड़ित झुग्गी या बीमारी से भरे कीचड़ में नहीं बल्कि स्वर्गलोक में रखा था। (संसार में दुख और क्लेश पाप के ही कारण आया।) हम जब तक ''प्रसन्न'' शब्द का अनुवाद संसार के बनावटी ढंग से नहीं करते, तब तक makrios इसका सही अनुवाद ''प्रसन्न''[18] हो सकता है।

राल्फ स्वीट ने लिखा है कि प्रसन्नता को ढूंढ़ने के दो तरीके हैं।[19] पहला तो ऐसा माहौल तैयार करने की आवश्यकता है जो हर किसी की पूर्ति करता हो। यह संसार का ढंग है जिसका नाकाम होना पक्का है। दूसरा ढंग व्यक्तित्व के ऐसे गुणों को विकसित करना है जो किसी को किसी भी माहौल में प्रसन्न रख सकते हों। यह धन्य वचनों का ढंग है।

गुण

आशीषित और प्रसन्न होने के लिए हमें व्यक्तित्व के कौन से गुणों की आवश्यकता है ?[20]

- हमें मन के दीन यानी अपनी आत्मिक निर्धनता से परिचित होना आवश्यक है।
- हमें अपने आत्मिक वंचित होने पर ''शोक'' करना आवश्यक है।
- हमें ''दीन'' और ''नम्र'' यानी परमेश्वर और उसके वचन के आगे झुकने को तैयार होना आवश्यक है।
- हमें ''धर्म के भूखे और प्यासे'' यानी प्रभु द्वारा धर्मी कहलाए जाने की अत्यधिक इच्छा होनी आवश्यक है।
- हमें ''दयावंत'' होना यानी अपने बजाय दूसरों की अधिक चिन्ता करने वाले होना आवश्यक है।
- हमें ''शुद्ध मन'' यानी ऐसे मन वाले होना आवश्यक है जो शुद्ध और साफ़ हों और परमेश्वर की बातों पर ध्यान लगाएं।
- हमें ''मेल कराने वाले'' होना आवश्यक है जो सक्रीय रूप में दूसरों और परमेश्वर को मिलाने की कोशिश करते हैं।
- हमें ''धर्म के लिए सताए'' जाने पर मसीह के वफ़ादार रहना आवश्यक है।

पहाड़ी उपदेश के आरम्भ से अन्त तक यीशु ने स्पष्ट कर दिया कि उसके राज्य के लोग शैतान के राज्य के लोगों से अलग होने चाहिए। सुझाव दिया गया है कि उपदेश का मुख्य विचार मत्ती 6:8 में मिलता है: ''सो तुम उनकी नाई न बनों ...।''[21] जॉन आर. स्टॉट ने लिखा है:

> पहाड़ी उपदेश का एक भी पद्य ऐसा नहीं है जिसमें मसीही और गैर मसीही के बीच के मानकों में यह अन्तर न हो ...। इसमें एक मसीही मूल्य का सिस्टम, नैतिक मानक, धार्मिक समर्पण, धन के प्रति व्यवहार, मंशा, जीवन शैली और सम्बन्धों का नैटवर्क है। जिनमें सभी गैर मसीही संसार के लोगों से पूरी तरह अलग हैं।[22]

धन्य वचनों से अधिक स्पष्ट ढंग से यह अन्तर और कहीं दिखाई नहीं देता।[23] यीशु ने कहा, ''धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं।'' संसार कहता है, ''धन्य हैं वे जो धनवान और घमण्डी हैं।'' यीशु ने कहा, ''धन्य हैं वे जो शोक करते हैं।'' संसार कहता है, ''धन्य हैं वे जिन्हें शोक करने का कोई कारण नहीं है।'' यीशु ने कहा, ''धन्य हैं वे जो नम्र'' और दीन हैं। संसार कहता है, ''धन्य हैं वे जो बलवान और शक्तिशाली हैं, जो दूसरों पर अपनी इच्छा थोप सकते हैं।'' यीशु कहता है, ''धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं।'' संसार कहता है, ''धन्य हैं वे जो उस सब के लिए जो यह जीवन उन्हें दे सकता है पाने के लिए अपने जीवनों में धक्का-मुक्की करते

हैं।'' यीशु ने कहा ''धन्य हैं जो दयावान हैं'' संसार कहता है कि ''धन्य हैं वे जो अपने साथ दुर्व्यवहार होने पर बदला ले सकते हैं।'' यीशु ने कहा, ''धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं।'' संसार कहता है, ''धन्य हैं वे जिन्हें लगता है कि शुद्धता की कोई आवश्यकता नहीं, सबसे आवश्यक अपनी लालसाओं की तृप्ति करना है।'' यीशु ने कहा, ''धन्य हैं वे जो मेल कराते हैं।'' संसार कहता है, ''धन्य हैं वे जो लड़ते और जीत जाते हैं!'' यीशु ने कहा, ''धन्य हैं वे जो धर्म के कारण सताए जाते हैं।'' संसार कहता है, ''धन्य हैं वे जो सताव से बच सकते हैं, विशेषकर धन्य हैं वे जो इतने बलवान हैं कि वे सताने वाले बन जाएं।''

प्रतिफल

हर धन्य वचन का समापन एक प्रतिफल के अनुमान से होता है। मसीह के राज्य के वफ़ादार लोगों को यह प्रतिज्ञाएं दी गई हैं:

- ''स्वर्ग का राज्य उन्हीं कहा है।''
- ''वे शान्ति पाएंगे।''
- ''वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।''
- ''वे तृप्त किए जाएंगे।''
- ''उन पर दया की जाएगी।''
- ''वे परमेश्वर को देखेंगे।''
- ''वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।''
- ''स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है''; ''स्वर्ग में उनका प्रतिफल बड़ा है।''

कुछ प्रतिफल इस जीवन पर केन्द्रित लगते हैं पर अन्य का ध्यान आने वाले जीवन पर अधिक लगता है मैं यह सुझाव देना चाहता हूं कि हर आशीष का आंशिक रूप में यहां और पूर्ण रूप में आने वाले जीनव में पूरा होना है। रॉबर्ट एच. माउंस ने लिखा है:

> प्रत्येक आशीष की अन्तिम अभिव्यक्ति चाहे अन्तिम निर्णय वाले दिन की प्रतीक्षा करती है, ये आशिषें अपने आप में वर्तमान समय में अनुभव की जानी और इनका आनन्द लिया जाना आवश्यक है। 4–9 आयतों में भविष्यकाल प्रतीक्षा के आवश्यक समय के बजाय उसके पक्का होने पर ज़ोर देता है।[24]

आपसी विशेष अवधारणाओं के रूप में आंशिक रूप में अब और पूरी तरह से बाद में पूरे होने पर नहीं, बल्कि एक ही आशीष के दो भागों के रूप में सोचें। कल्पना करें कि अपना पूरा जीवन आप सुन्दर स्थान में जाने की बड़ी इच्छा रखते थे। आपने उस इलाके की तस्वीरें देखी हैं और वहां जाने का सपना पाला है। अन्त में, आप मन बनाकर वहां जाने के लिए निकल पड़ते हैं। रास्ते में, आपके आस पास का देहात और से और प्रिय बनता जाता है और वह और अधिक वैसा लग रहा है जैसा आपने अनुमान लगाया था। अन्त में आप एक कोने को मुड़ते हैं और वहां पहुंच जाते हैं! आप अपनी मंजिल पर आ गए हैं और यह उससे कहीं सुन्दर है जिसकी आपने कल्पना की होगी! मसीह के राज्य के विश्वासी लोगों के लिए जीवन ''यात्रा'' है और ''मृत्यु

कोने का मुड़ना'' है।

मैं धन्य वचनों के प्रतिफलों को आंशिक और अन्त में पूरी तरह से पूरा होने का सुझाव देता हूं:

- ''धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।'' अब वे मसीह के राज्य (कलीसिया) के लोग बन सकते हैं और वे स्वयं स्वर्ग में अनन्तकाल की राज देख सकते हैं।
- ''धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शान्ति पाएंगे।'' यहां उन्हें अपने पापों की क्षमा पाने के द्वारा शान्ति दी जाती है। इसके बाद वे परमेश्वर की उपस्थिति में शान्ति पाएंगे।
- ''धन्य हैं वे, जो [दीन और] नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।'' वे इस जीवन की सच्ची आशिषों का आनन्द ले सकते हैं और एक दिन वे ''नई पृथ्वी'' (स्वर्ग) के वासी होंगे।
- ''धन्य हैं वे, जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे।'' पृथ्वी के इस जीवन में उन्हें परमेश्वर के वचन और परमेश्वर के उपाय के द्वारा पाला पोसा जाता है। अगले जीवन में, उनकी आत्माएं स्वर्ग में पूर्ण तृप्ति को जान लेंगे।
- ''धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।'' यहां दयावान लोगों को परमेश्वर की ओर से दया मिलती है और कई बार दूसरे लोगों की ओर से मिल जाती है। बेशक ईश्वरीय दया की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति स्वर्ग में अनन्त उद्धार ही होगा।
- ''धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।'' वे विश्वास की नज़र से अब परमेश्वर को देखते हैं, पर स्वर्ग में वे उसे आमने-सामने देखेंगे।
- ''धन्य हैं वे, जो मेल कराने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।'' आज वे परमेश्वर के परिवार अर्थात कलीसिया में उसकी सन्तान हैं। एक दिन पुत्र होने की प्रक्रिया स्वर्ग में पूरी हो जाएगी।
- ''धन्य हैं वे, जो धार्मिकता के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।'' वे अब आनन्द कर सकते हैं क्योंकि उन्हें मसीह के काम के लिए सताया जाता है। वे विशेषकर आनन्द करते हैं क्योंकि यीशु ने वचन दिया क्योंकि स्वर्ग में उनका प्रतिफल बड़ा है।

सारांश

ई. स्टेनली जोन्स ने लिखा है, ''इन आधुनिक दिनों में लोगों को किसी और बात की उतनी आवश्यकता नहीं है, जितनी जीवन में काम करने वाले फलसफे की।'' पानी के जहाज के रूपक का इस्तेमाल करते हुए, जोन्स से सुझाव दिया कि आधुनिक मनुष्य ने अपने आपको उन तारों से छुड़ा लिया है, जो किसी समय उसे सुरक्षित रखती थी। उसने अपने चार्ट, अपनी कम्पास, अपने स्टेयरिंग व्हील और मंजिल की किसी भी अवधारणा को उल्टा दिया है। उसने अपने आपको ''आज़ाद!'' घोषित कर दिया है। जॉन्स ने निष्कर्ष निकाला कि ऐसा कार्य करने के बाद लोग

आज ''हर पास, पत्थरों, तूफ़ानों और बेकार की भावना के एक से दूसरी लहर में पटके जाने के पागलपन से आज़ाद हैं।''[25] पहाड़ी उपदेश ''जीवन के काम करने वाले फलसफे को दे सकता है जिसकी लोगों को इतनी शिद्दत से आवश्यकता है। इस बात को समझें कि यह उपदेश केवल प्रशंसा किए जाने वाला आदर्श नहीं है। न ही यह केवल वह मानक है जिसके द्वारा हमारे जीवनों को मापा जाना आवश्यक है। यह तो मसीह का ''जीवित और प्रबल'' वचन है (इब्रानियों 4:12) जिसे वह अपने चेलों से *मानने* की उम्मीद करता है (देखें मत्ती 7:24-27)।

उपदेश की पृष्ठभूमि पर फिर वापस चलते हैं। यीशु बैठा हुआ सिखा रहा है। उसके आस पास उसके चेले, जमा हैं जो जानने और करने के बड़े इच्छुक हैं। उनके आस-पास भीड़ है, जिसमें वे लोग हैं जो सुन रहे हैं, उत्सुक हैं और शायद चकित हैं, परन्तु उन पर यह उपदेश इतना प्रभाव नहीं डालता। आप अपने आपको किस समूह में पाते हैं, चेलों के समूह में या भीड़ में? यदि आप भीड़ में हैं तो मेरी प्रार्थना है कि हमारी शृंखला पूरी होने से पहले आप यीशु मसीह के चेलों के चुने हुए समूह का भाग बन जाने का निर्णय लें।

टिप्पणियां

[1]चार्ल्स आर. अर्डमैन, *दि गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1966), 53. [2]जिम बिल मेक्लन्टियर, ''दि प्लेस, द पीपल, द प्रीचर,'' *ट्वंटियथ सेंचुरी क्रिश्चियन* 23 (अगस्त 1961): 3. [3]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ द सरमन ऑन द माउंट,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी, 1978), 15. [4]अर्डमैन, 53. [5]पुरानी वाचा क्रूस पर मसीह की मृत्यु तक प्रभावी थी ''और नई वाचा यीशु के मृत्यु के समय प्रभाव में आई'' (देखें कुलुस्सियों 2:14; इब्रानियों 9:15-17)। [6]हमारे लिए पुराने नियम के ढंगों से नये नियम के व्यवहारों की बात करना कठिन नहीं है। उदाहरण के लिए ''अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने रखना'' (5:23) ''आराधना के लिए परमेश्वर के पास आने'' के समान है। [7]ई. स्टेनली जोन्स, *दि क्राइस्ट ऑफ़ द माउंट* (न्यू यॉर्क: अबिंग्डन प्रैस, 1931), 14 में उद्धृत। [8]सी. जी. विल्के एंड विलिबल्ड ग्रिम्म, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ द न्यू टैस्टामेंट,* अनु. व संशो. जोसेफ एच. थेयर (एडिनबर्ग: टी. एंड टी. क्लार्क, 1901; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1977), 454. [9]मत्ती में ''चेला'' या ''चेलों'' शब्द का इस्तेमाल यहां पहली बार हुआ है। [10]डेविड रोपर, *दि लाइफ ऑफ़ क्राइस्ट, 1,* टुथ फ़ॉर टुडे कमैंट्री सीरीज़ (सरसी, आरकैंसा: रिसोर्स पब्लिकेशंस, 2003), 218.

[11]ए. लुकिन विलियम्स, ''सेंट मैथ्यू,'' *दि पुलपिट कमैंट्री,* अंक 15, संपा. एच. डी. एम. स्पेंस एंड जोसेफ एस. एक्सेल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1950), 146. [12]जैक पी. लुईस, *दि गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू, पार्ट 1,* लिविंग वर्ड सीरीज़ (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 78. [13]हार्वे स्कॉट, *दि सरमस ऑन द माउंट* (टैक्सरकाना, टैक्सस: दि क्रिश्चियन हेल्पर, 1947), 3. [14]यदि आप धन्य वचनों पर शृंखला में सिखाते हैं तो आप मई 2008 से उस अध्ययन की बात कर सकते हैं। [15]उदाहरण के लिए, देखें भजन संहिता 1:1. प्रकाशितवाक्य की पूरी पुस्तक में सात धन्य वचन बिखरे हुए हैं (1:3; 14:13; 16:15; 19:9; 20:6; 22:7, 14)। [16]आर. टी. फ्रांस, *दि गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1985), 108. [17]वही। [18]NASB में 1 कुरिन्थियों 7:40 में इस शब्द का एक रूप ''happier'' अनुवाद किया गया है। [19]राल्फ स्वीट, *मोमेंट्स ऑन द माउंट,* लिविंग वर्ड सीरीज़ (ऑस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1963), 17. [20]अगली सूची इस पुस्तक में पाए पहले ''धन्य वचनों'' में पहुंचे गए निष्कर्षों पर आधारित है। आपको प्रत्येक धन्य वचन पर उस अध्ययन की बात पर समीक्षा करनी चाहिए।

[21]स्टॉट, 18. [22]वही., 19. [23]अगला अन्तर 1 जनवरी 2006 को ट्रैंट चर्च ऑफ़ क्राइस्ट में दिए गए कोय रोपर के संदेश ''हाउ टू फ़ाइंड हैपिनैस'' से नोट्स पर आधारित है। [24]रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनेशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 38. [25]जोन्स, 9.